RESEARCH RIVAL **ISSN: 2456-1096**
(A Multi-Disciplinary Peer-Reviewed and Refereed Bi-Annual Research Journal) **Vol. 10, Issue 2**
July-December 2024

अतीत से भविष्य तक हिंदी

डॉ॰ लीना गोयल
सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी
E-mail: drleenagoyal1412@gmail.com

सारांश :
यह शोध पत्र हिंदी भाषा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, उसकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता, और भविष्य में उसके विकास की संभावनाओं पर केंद्रित है। हिंदी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है, जो न केवल भाषाई विविधता का प्रतिनिधित्व करती है, बल्कि भारतीय संस्कृति और इतिहास का अभिन्न हिस्सा भी है। पेपर में यह बताया गया है कि अतीत में हिंदी ने समाज को जोड़ने, ज्ञान के आदान–प्रदान और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में यह तकनीकी युग में डिजिटल माध्यमों, शिक्षा और वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाने की दिशा में प्रगति कर रही है। भविष्य के दृष्टिकोण से, हिंदी के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, और इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के साथ अनेक अवसर उपलब्ध हैं। शोध में हिंदी के वैश्वीकरण, साहित्यिक विस्तार, और भाषा संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले कदमों का भी उल्लेख किया गया है।

मुख्य शब्दः हिंदी भाषा, सांस्कृतिक प्रासंगिकता, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, डिजिटल युग, वैश्वीकरण, भाषा संरक्षण, तकनीकी विकास, साहित्यिक विस्तार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, भविष्य की संभावनाएं

इसे हमें हिन्दी का ही नहीं, इस देश का दुर्भाग्य कहना चाहिए कि हिन्दी न केवल अहिन्दीभाषी प्रदेशों में बल्कि स्वयं अपने प्रदेशों में भी एक राजनीतिक प्रश्न के रूप में गत पचास वर्षों से सामने रखी जाती रही है। यहां तक कि देश जब स्वाधीन हो रहा था तब भी हिन्दी राजनीतिक कठघरे में खड़ी की गई। देश के विभाजन के लिए एक मुद्दा यह भी था कि उर्दू को हिन्दी के बराबर दर्जा मिलना चाहिए और उस समय के कर्णधारों ने खीझकर कहा था, 'ले जाओ अपना अलग पाकिस्तान, हमें उर्दू चाहिए।[1] फिर जब संविधान में राजभाषा का प्रश्न उठा तो हिन्दी राजनीतिक शतरंज का एक मोहरा बनाई गई राजनीतिक कर्णधारों ने बजाए यह निर्णय लेने के कि अमुक भाषा राजभाषा हो और उसके पठन–पाठन की व्यवस्था सारे देश में अमुक तिथि तक हो जाए, निर्णय यह किया कि प्रस्तावित राजभाषा का स्वरूप इस प्रकार हो और पंद्रह वर्षों के बाद यह राजभाषा हो जाए। किसी भी भाषा के लिए इससे बड़े दुर्भाग्य की स्थिति नहीं हो सकती है। उसे खराद पर चढ़ा दिया गया जिससे वह उतर नहीं सकती है, क्योंकि उतारने वाले बराबर कहते रहेंगे कि पहले यह अपनाने योग्य हो जाए तब हम इसे पढ़ें–पढ़ायें। परिणाम यह हुआ कि गरीब हिन्दी के व्यवहार का प्रश्न ओट में चला गया और उसके निर्माण का काम ऊपर आ गया। 14 सितंबर को अनेक दवाबों के चलते हिन्दी भारतीय संघ में इस शर्त पर राजभाषा घोषित हुई कि पंद्रह वर्षों तक पहले वह प्रतीक्षा करे निर्वासन का दंड झेले फिर उसके बाद भाषा आयोग के निर्णय के अनुसार आगे कार्रवाई हो। इस अतंराल में हिन्दी अपने को विकसित करे।

हिन्दी तो पुराणों की भाषा रही है। जहां से ना जाने कितनी भाषाओं ने जन्म लिया है। हिन्दी को विभिन्न भाषाओं की उत्पत्ति का स्त्रोत माना जा सकता है। किसी भी भाषा का ज्ञान हिन्दी के बिना सम्भव नहीं है। हिन्दी की लिपि देवनागरी लिपि है। जिसे विश्व में सबसे विस्तृत लिपि का दर्जा प्राप्त हो चुका है। जब हिन्दी की जन्मदात्री इतनी विस्तृत है तो वह स्वयं कैसे निकृष्ट कोटि की हो सकती है। विभिन्न सैद्धान्तिक विषयों की उत्पत्ति एवं विकास की नींव हिन्दी है इसका प्रमाण हमें विज्ञान और गणित से मिलता है क्योंकि जीरो का अविष्कार न होता तो गणित का आज विश्व में कोई ज्ञाता न होता।[2]

भारत की जनसंख्या विश्व में दूसरे नम्बर पर है, इतने बड़े देश की मुख्य भाषा हिन्दी निःसंदेह लोकप्रियता की परिचायक है। इस भाषा ने अपने साहित्य और शोध कार्यों से सबको अपनी ओर आकर्षित किया है। दूरदर्शन और मीडिया की चर्चा करें तो हिन्दी में प्रदर्शित होने वाले चलचित्रों एवं धारावाहिकों ने विश्व भर के लोगों के दिलों में जगह बनाई है। इस तथ्य को प्रमाण की आवश्यकता नहीं है कि भारतीय फिल्म जगत की मुख्य आय अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकों से ही बनती है।

"पर्यटन स्थलों में नम्बर वन रहने वाला भारत विदेशी लोगों को अपनी प्राकृतिक सुंदरता की ओर आकर्षित करता है।"[3] जिसके कारण विदेशी भारत में आना चाहते

है और यहां की भाषा और संस्कृति से आत्मसात करना चाहते हैं।

यदि "इंटरनेट की बात करें तो एक समय था जब वाट्सएप में भारत के झंडे को भी स्थान प्राप्त नहीं था। परंतु वर्तमान में भाषा अनुवाद में पहला नाम हिन्दी का लिया जाता है। इसी तरह वाट्सएप जिसका आज के समय में कोई सानी नहीं हैं।[4] उन्होंने हिन्दी के महत्व को देखते हुए अपना चित्रित सॉफ्टवेयर यानी सिमली सम्पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया। कितनी अजीब बात है न कि चीज़ तो विदेशी है परंतु सबसे अधिक प्रयोग इसे भारत में किया जाता है या ये कहें कि विदेशी, भारत पर निर्भर करते हैं।

दरअसल भारत की सांस्कृतिक एवं आर्थिक सुदृढ़ता को देखते हुए विदेशी, हिन्दी को अपनाकर भारत से जुड़ने का प्रयास लगातार कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर जैसे "पेरिस विश्वविद्यालय में हिन्दी लेने वाले छात्रों की संख्या चौगुनी हो गई है। तिब्बती भाषा में हिन्दी शब्दों को सीधे लेने की परिपाटी नहीं है किंतु उनकी परिभाषाएं आयुर्वेद, ज्योतिष और दर्शन में हिन्दी के सहारे बनी हैं और भविष्य में साईंस की परिभाषाएं भी उसी के सहारे बन रही हैं।"[5] तो फिर क्यूं... क्यूं आज हिन्दी को पूर्णतः एक विश्व भाषा की उपाधि प्राप्त नहीं है।

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि अगर देश को जोड़ना है तो इसे राष्ट्रभाषा हिन्दी के द्वारा ही एक सूत्र में बांधा जा सकता है परंतु कुछ व्यक्ति अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए इसे आज भी राष्ट्रभाषा नहीं मानते और ना ही बनने देना चाहते हैं। वह इसे अछूत भाषा बनाकर अपने स्वार्थों की सिद्धि कर रहे हैं। चीन, जापान जैसे देश आज विकसित हैं उसका एक कारण यह माना गया है कि यह देश उच्च शिक्षा अपने देश की भाषा में प्राप्त करते हैं और सफलता पाते हैं। इसलिए भारत में उच्च शिक्षा के रूप में राष्ट्रभाषा हिन्दी को ना अपनाया जाना ही शायद सबसे बड़ी कमी है। हमारे यहां हिन्दी को छोड़कर अन्य विषयों पर होने वाली संगोष्ठियां सदैव अंग्रेजी भाषा में ही सम्पन्न होतीं हैं।

यहां तक की मनोरंजन की बात लें तो बड़े पर्दे पर फिल्मों को प्रदर्शित करने के लिए दूसरी भाषाओं का सहारा लेना पड़ता है। वर्तमान में हिन्दी हीनता से ग्रसित होती जा रही हैं। यूं तो एक तरफ हम देशभक्ति और संस्कारों की बड़ी–बड़ी बातें करते हैं फिर क्यूं चार लोगों के संगठन में हमारी हर सभ्यता और संस्कृति को प्रदर्शित करने का स्रोत अंग्रेजी बन जाती है। यहां तक कि किट्टी पार्टिज, बर्थ–डे के उपलक्ष्य पर भी हम छोटे–छोटे बच्चों का अंग्रेजी ज्ञान चैक करने से नहीं चूकते। कुल मिलाकर बात की जाए तो वर्तमान में योग्यता की परीक्षा में खरा उतरने का प्रमाण अंग्रेजी में बोलना है। घर आए मेहमान के सामने बच्चे से अंग्रेजी भाषा में कविताएं सुनकर हम वाहवाही तो लूट लेते हैं परंतु क्या हम आने वाली पीढ़ी के मन में भी हीनता की भावना तो पैदा नहीं कर रहे और उनके सामने अंग्रेजी भाषा को उच्च कोटि का प्रमाणित कर रहे हैं।[6] यह हीनता उसके सामने जीवन भर चलती है, जिसके कारण एक बच्चा बचपन से ही विदेशी भाषाओं की ओर खिच रहा है। बचपन में ही जब हम उनकी सोच पर अन्य भाषाओं से आघात करते हैं तो उनके शब्द रास्ते से भटक जाते हैं और वह अपने क्षेत्र में पिछड़ जाते हैं। हम सब जानते हैं कि भाषा संचार एक सीधी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत पहले सोच–विचार–वाणी–शब्द–कर्म–फल आता है, परंतु आज की मनोदशा ऐसी है कि हम विचार तो हिन्दी में करते हैं पर भावों का उद्गार अंग्रेजी में रखा जाता है जिससे सीधे तौर पर हमारे फल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शायद यही कारण है कि हर क्षेत्र में सम्पन्न होने के बाद भी भारत को पिछड़े देशों की गिनती में रखा जाता है।

भाषा विचारों और व्यवहारों की वाहिका होने के साथ–साथ राष्ट्र की अस्मिता होती है। विश्व में चीनी भाषा के बाद सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा 'हिन्दी' है। लेकिन आजादी के 75 वर्षों के बाद भी हिन्दी को वह सम्मान व गौरव नहीं मिला जिसकी वह अधिकारिणी है। उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी को विश्वभाषा के रूप में किस प्रकार प्रतिष्ठित किया जाए, यह विचारणीय विषय है। यह सही है कि हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में विश्वभाषा और विश्व लिपि बनने की अपार सम्भावनाएं हैं। संविधान के अनुसार राजभाषा होते हुए भी हम अपने ही देश में व्यावहारिक रूप में इसे राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित नहीं कर पाए हैं। यह सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर सदैव उपेक्षा की शिकार रही है। इस प्रकार की चुनौतियों का सानुकूल निदान करते हुए हिन्दी को किस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई जाए, यह हिन्दी प्रेमियों के लिए एक ज्वलंत समस्या है। विश्वभाषा के रूप में हिन्दी के समृद्ध शब्दकोश को समृद्धतर करने की आवश्यकता है। विज्ञान और तकनीकी के नए आयामों को देखते हुए नए शब्दों को गढ़ने की और विदेशों में सम्पन्न हुए अनुसंधानों के लिए प्रयुक्त शब्दावली को ज्यों का त्यों या कुछ संशोधन के साथ आत्मसात करने की महती आवश्यकता है। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि हिन्दी भाषियों की भाषागत कुण्ठा को कैसे समाप्त किया जाए, दैनन्दिन जीवन में हिन्दी के प्रयोग की मानसिकता को कैसे बढ़ावा दिया जाए और राष्ट्र तथा विश्व के युवाओं को रोजगार के माध्यम से, विज्ञान एवं तकनीकी के माध्यम से तथा साहित्य और मानविकी अनुशासनों के माध्यमों से सीधे तौर पर हिन्दी भाषा से कैसे जोड़ा जाए।

हिन्दी भाषा हमारे भारत की आधी भूमि और लोगों की भाषा है। इसलिए हमारे साहित्य सेवियों को अपने दायित्व को भली भांति समझना चाहिए और ऐसे साहित्य का निर्माण करना चाहिए जो भारत और विश्व में हिन्दी के मस्तक को ऊंचा रख सके।

हिन्दी को इस नए युग में अपने साहित्य की पूर्णता को प्राप्त कराना है। सोच–परिवर्तन के बन जाने की देर है साहित्य का सृजन तो स्वतः होने लगेगा। विश्व पटल पर हिन्दी का विस्तार होने की सम्भावनाएं बढ़ने लगेंगी। उसकी सबसे बड़ी मांग स्कूलों और कॉलेजों की पाठ्य पुस्तक के रूप में होगी, जिसके लिए प्रकाशक सबकुछ करने के लिए तैयार हैं। हिन्दी माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त किए लोगों की संख्या वृद्धि के अनुसार हिन्दी के विस्तार की सम्भावनाएं बढ़ सकेंगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. हिन्दी का नया जनक्षेत्र – सुधीर पचौरी, पृष्ठ–50
2. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 35वें अधिवेशन का वक्तव्य
3. हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव – जवाहर लाल कौल, पृष्ठ–93
5. हिन्दी का नया जनक्षेत्र – सुधीर पचौरी, पृष्ठ–16
6. विदेशों में हिन्दी – डॉ. पवन कुमार जैन, पृष्ठ–22
7. राष्ट्रभाषा हिन्दी – राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ–55